सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय २९ अप्रैल २०१३ के दीक्षांत समारोह के अवसर पर माननीय राज्यपाल डा० सैयद अहमद का अभिभाषण

दीक्षान्त समारोह के मुख्य अतिथि परम आदरणीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी जी, माननीय सांसद एवं विधायकगण, परामर्शी श्री मधुकर गुप्ता एवं श्री के० विजय कुमार, कुलपति डा. एम. बशीर अहमद खान, प्रतिकुलपति, कुलसचिव, सिनेट एवं सिंडिकेट के सदस्यगण, शिक्षाविद, केन्द्र एवं राज्य सरकार के वरीय पदाधिकारीगण, अभिभावकगण, उपाधि प्राप्त करने वाले मेरे प्यारे विद्यार्थीगण, प्रेस व मीडिया के बंधुओं!

विश्वविद्यालय के चांसलर के रूप में, मैं विशेष तौर से राष्ट्रपति महोदय का तहे दिल से इस्तकबाल करता हूँ। आज के मुख्य अतिथि के रूप में माननीय राष्ट्रपति महोदय जी का आगमन निश्चित रूप से पूरे विश्वविद्यालय एवं मेरे लिए खुशकिस्मती की बात तो है ही, साथ ही उनके आगमन से सूबे के सभी लोग उत्साहित व रोमांचित हैं। मेरे लिए यह और भी खुशी की बात है कि राष्ट्रपति जी इस दौरे में राज्य के इस पिछड़े क्षेत्र में विकास के बहुआयामी पहलुओं को छू रहे हैं, जो इस क्षेत्र में सर्वांगीण विकास लाएगा।

परम आदरणीय राष्ट्रपति महोदय के इस दीक्षांत समारोह में शिरकत करने से समारोह की अहमियत और अधिक हो गई है। राष्ट्रपति महोदय का स्वच्छ व प्रेरणादायक राजनैतिक और समाजिक जीवन सर्वविदित है। एक लोकप्रिय विद्वान जननेता के रूप में प्रतिष्ठित और सम्मानित राष्ट्रपति महोदय व्यवहार कुशल, मृदुभाषी एवं

संवेदनशील स्वभाव और बेहतर प्रशासनिक अनुभव हेतु सभी के बेहद प्रिय हैं।

राष्ट्रपति जी मूलतः एक शिक्षक भी हैं। उनका इस दीक्षांत समारोह में आर्शीवचन हमें शिक्षा, शासन, राजनीति के अनेक पहलुओं से परिचित कराकर हमारे विद्यार्थियों, शिक्षकगणों का जीवन भर मार्गदर्शन करेगा। राष्ट्रपति जी लगभग 50 वर्ष के राजनीतिक/संसदीय जीवन में 7 बार सांसद, वित्त मंत्री, विदेश मंत्री, रक्षा मंत्री, उपाध्यक्ष योजना आयोग जैसे अनेक महत्वपूर्ण पदों पर आसीन रहकर जुलाई 2012 में देश के 13वें राष्ट्रपति बने।

जम्हूरियत की मजबूती और देश हित के विभिन्न मुद्दों पर विभिन्न विचारधाराओं वाले राजनीतिक दलों से बेहतर ताल-मेल कायम कर आम सहमति बनाने में आपका खास योगदान रहा है। देश हित में लिये गये कई ऐतिहासिक फैसलों जैसे- सूचना का अधिकार, प्रशासनिक सुधार, रोजगार का अधिकार, खाद्य सुरक्षा, ऊर्जा सुरक्षा, सूचना प्रोद्यौगिकी, आधार, मेट्रो रेल परियोजना और संचार आदि में आपकी अहम भागीदारी रही है। हमें आपके उद्बोधन से राष्ट्र के समक्ष चुनौतियों, संभावनाएँ एवं उनमें हमारी भूमिका एवं दायित्व को समझने में बहुत मदद मिलेगी।

माननीय राष्ट्रपति महोदय हमारे राज्य के विकास के प्रति अत्यन्त गंभीर हैं। मैं जब भी अपने आदरणीय राष्ट्रपति महोदय से मिलने हेतु जाता हूँ, विकास कार्यों पर ही चर्चा होती है और हमें उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता है। प्राकृतिक एवं खनिज संपदा से भरपूर झारखण्ड राज्य में विकास की असीम संभावनायें हैं, अतः तरक्कीयाफ्ता सूबों की कतार में

हमारा राज्य हो, यह हमारे राष्ट्रपति महोदय की दिली इच्छा रहती है। इस समय राज्य में संविधान के अनुच्छेद 356 ¼1½ के तहत राष्ट्रपति शासन लागू है। सूबे के लोगों को स्वच्छ, प्रभावी एवं पारदर्शी शासन सुलभ कराने, विकास व कल्याणकारी कार्यक्रमों को तेज गति देने की दिशा में, पूरी कोशिश की जा रही है। इस निमित्त कई महत्वपूर्ण निर्णय लेने के साथ-साथ दिशा-निदेश भी दिये गये हैं, ताकि अवाम को उसका शत्-प्रतिशत लाभ मिले, उनके चेहरे पर खुशहाली हो, विकास की रौशनी चमके।

सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय देश के महान स्वतंत्रता सेनानी सिदो एवं कान्हु दो भाईयों के नाम पर बना है। सिदो, कान्हु, चाँद एवं भैरव ने अंग्रेजों के खिलाफ लड़ाई में अपनी शहादत दी थी। तत्कालीन बंगाल प्रांत के संताल परगना के इस बड़े हिस्से के आर्थिक शोषण के विरूद्ध सिदो, कान्हु, चाँद एवं भैरव ने यहां के लोगों के बीच व्यापक राष्ट्रीय चेतना एवं भावना विकसित करने में अपना योगदान दिया, जिसे कभी भी भुलाया नहीं जा सकता। मुझे खुशी है कि सिदो, कान्हु के नाम पर बना यह विश्वविद्यालय अपने को राज्य के बेहतर विश्वविद्यालय के रूप में विकसित करने की पूरी कोशिश कर रहा है।

सिदो कान्हु मुर्मू विश्वविद्यालय, दुमका की क्षेत्रीय तथा भौगोलिक दृष्टिकोण से एक विशिष्ट पहचान है। राज्य के विभिन्न विश्वविद्यालयों का चांसलर होने का मुझे जब से गौरव हासिल हुआ है, तब से हमारी कोशिश रही है कि सत्र नियमित हो, परीक्षा समय पर हो तथा रिजल्ट सही समय पर जारी हो, उन्हें प्रमाण-पत्र ससमय मुहैया कराया जाय

ताकि स्टूडेंट्स का किसी भी प्रकार का समय जाया न हो। शिक्षा के हित में मेरे द्वारा नियमित रूप से विश्वविद्यालयों की समीक्षा बैठक आहूत की जाती है, जिसमें कई क्षेत्रों में तेजी से काम करने एवं ध्यान देने हेतु कहा गया है, यथा- सभी विश्वविद्यालय एकैडिमिक कैलेंडर का निर्माण करें और उस अनुरूप कार्य करें, अपने वेबसाइट को अप-टू-डेट रखें, उस पर सभी सूचनायें अपलोड हों। विद्यार्थियों को गुणवत्तयुक्त शिक्षा मिले, विश्वविद्यालय में शोध का स्तर बेहतर बनाने हेतु कोशिश की जा रही है। विद्यार्थियों में कम्पटीशन की भावना को प्रबल बनाने के लिए मेरे द्वारा स्नातक की परीक्षा में अपने-अपने संकाय (आर्ट्स, साइंस, कॉमर्स) में सबसे अधिक अंक लानेवाले स्टूडेंट्स को अपने विवेकाधीन अनुदान मद से 50&50 हजार की राशि दी गई। अनुसूचित जनजातियों पर विशेष ध्यान देते हुए उन्हें अलग कोटि में रखकर टॉपरों को 50&50 हजार रूपये की राशि पुरस्कार स्वरूप दी गई। साथ ही एक विद्यार्थी को ओवरऑल टॉपर का खिताब दिया गया। मुझे यहाँ यह कहते हुए खुशी हो रही है कि पुरस्कार पाने वाले विद्यार्थियों में इस विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों की भागीदारी अच्छी रही है। खेल के क्षेत्र में हौसलाअफजाई हेतु चांसलर ट्रॉफी का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया। ज्ञान आधारित समाज के निर्माण में हमारे शिक्षकों एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारियों की भूमिका काफी महत्वपूर्ण है। उनके हित से जुड़े सभी पहलुओं पर ध्यान दिया जा रहा है। समीक्षा बैठक के दौरान जब मुझे यह मालूम हुआ कि राज्य के बच्चों को शिक्षित करने की जिम्मेदारी जिन मजबूत कंधों पर है, उनके हित से जुड़े मुकदमे वर्षों से न्यायालय

में लंबित हैं तो मुझे काफी दु:ख व हैरानी हुई। उनकी समस्याओं का निदान हो, उनको उनका वाजिब हक मिले, इस दिशा में झारखण्ड उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं झालसा के अध्यक्ष से लोक अदालत के आयोजन हेतु कहा, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में देश में पहली बार अलग से आयोजित इस लोक अदालत के जरिये लगभग 7 करोड़ रूपये का भुगतान लाभुकों के बीच किया गया।

आज का दौर भूमंडलीकरण का है। भूमंडलीकरण के इस बदलते दौर में बहुत सारी चीजें बदल रही है। विश्व का शैक्षिक परिदृश्य भी बदल रहा है। आज पहले से कहीं अधिक स्थानीय, राष्ट्रीय और विश्व **(Local, National & Global)** के बीच ताल–मेल कायम करने की जरूरत है। आज का समय सूचना प्रधान और अर्थ प्रधान है, आज जिसके पास सूचना है, नॉलेज है, उसी के पास अर्थ है। आज इनफॉरमेशन और नॉलेज की ताकत सबसे बड़ी ताकत है। अब वेब की अपनी दुनिया बन चुकी है। आज का उद्योग–जगत पहले से भिन्न है। यह सूचना उद्योग, सूचना विस्फोट और सूचना साम्राज्य का युग है। सूचना तंत्र, कम्प्यूटर, इंटरनेट, ई–मेल आदि को अनदेखी कर हम आगे नहीं बढ़ सकते।

आज हमें समय की बदलती रफ्तार के साथ अपने को बदलना होगा, तेज और सक्रिय दिमाग से आगे बढ़ना होगा। तकनीकी क्रान्ति हो चुकी है और यदि हम इन सब चीजों की उपेक्षा करेंगे तो हम पिछड़ जायेंगे। नई तकनीक के लिए नयी ऊर्जा, नया सोच–विचार चाहिये और इसके लिए विश्वविद्यालय ही सबसे उपयुक्त जगह है। विकासशील देश को विकसित देश बनाने की जिम्मेवारी विश्वविद्यालय के युवा और मेधावी

शक्ति की है। विश्वविद्यालयों को विकास की इस तेज रफ्तार में शामिल होना होगा, ताकि हम पीछे न रह जायें। इसके लिए बेहतर सिलेबस के साथ-साथ व्यावसायिक पाठ्यक्रम और रोजगारपरक शिक्षा पर विशेष ध्यान देना होगा। **Vocational Courses** और **Job Oriented Courses** रोजगार की दृष्टि से अधिक उपयोगी साबित हो रही है। अब पुरानी नौकरियों के स्थान पर अनेक प्रकार की नई नौकरियाँ आ रही है। हमारे छात्र-छात्राओं को उसके लिए, उसके अनुरूप तैयार करना होगा लेकिन इसका कतई यह अर्थ नहीं है कि पारंपरिक पाठ्यक्रमों को समाप्त कर दें, बल्कि हमें उसमें समय के अनुकूल बदलाव लाना होगा।

शिक्षा का क्षेत्र आज अनेक चुनौतियों से भरा हुआ है। हम ऐसे शैक्षिक परिवेश का निर्माण करना चाहते हैं, जो एक साथ स्टूडेंट्स, टीचर्स और समाज तथा देश के लिए लाभकारी और मंगलकारी हो। यह दौर समय प्रबंधन **(Time Management)** का है, जिसमें हमें प्रत्येक क्षण का सदुपयोग करना है। हमें सभी प्रकार की चुनौतियों का लगन, मेहनत और निष्ठा से सामना करते हुए एक ऐसा माहौल कायम करना है जिससे व्यक्तित्व और समाज का विकास संभव हो।

शिक्षित समुदाय ही किसी भी समाज का पथ-प्रदर्शक होता है। समाज का नेतृत्व करने के लिए उच्चतर मूल्यों का निर्वाह करना आवश्यक है। आप जिस किसी भी क्षेत्र का चयन करें, आपको उस क्षेत्र में **Excellence** हासिल करनी है और यह केवल मेहनत और लगन से ही संभव है। यह मेहनत और लगन पढ़ने और पढ़ाने वाले, दोनों के लिए जरूरी है। उच्च शिक्षा का संबंध बेहतर शिक्षा से है और यही शिक्षा

बेहतर समाज का निर्माण भी करती है। हम सदैव विश्वविद्यालय को विज़नरी बनने के लिए कहते हैं। भूमंडलीकरण ने हमें नए अवसर प्रदान किये हैं और नई चुनौतियाँ भी दी हैं। इस मौके का लाभ हमें उठाना चाहिये और नई चुनौतियों को स्वीकारना भी चाहिये। समय के अनुसार अपने को बदलकर और नई चुनौतियाँ स्वीकार कर हम आगे बढ़ेंगे और अपने साथ समाज के भविष्य का निर्माण भी करेंगे।

अंत में मैं कहना चाहूँगा कि दीक्षांत समारोह का अवसर स्टूडेंट्स के लिए यादगार लम्हा होता है। वे डिग्रियाँ लेकर कर्म-क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। उनके सामने उनका भविष्य खड़ा रहता है, लेकिन डिग्रियाँ हासिल करने से शिक्षा का समापन नहीं होता, अपितु एक नई यात्रा का आरंभ होता है। पूरी गति और वेग के साथ, विवेक और समझदारी के साथ आप अपना और समाज का विकास करें, यही हमारी मंगलकामना है।

मैं एक बार पुनः माननीय राष्ट्रपति महोदय का तहे दिल से आभार प्रकट करना चाहूँगा कि उन्होंने यहाँ आकर न केवल डिग्रीधारक स्टूडेंट्स की हौसलाअफजाई की, बल्कि सम्पूर्ण विश्वविद्यालय परिवार को आनन्द से अभिभूत किया है और हमारे सूबे की इज्जत बढ़ाई है।

जय हिन्द! जय झारखण्ड!